कुछ हजार थी, वही संख्या कर्मचारियों की अब है। संसार जिस तेज गति से आगे चल रहा है उसमें रेलवे को अलग नहीं रख सकते है। आज के युग में जहां कम्प्यूटर के द्वारा रिजर्वेशन होता है तो हाथ से लिखकर रिजर्वेशन नहीं किया जा सकता है। हमारे यहां आदमी की कमी नहीं है, दूसरे कंट्रीज में मैनपावर की कमी है, हमारे यहां मैनपावर ज्यादा है। मैनपवार के साथ-साथ जो इफीसियेन्सी का सवाल है, उस इफीसियेन्सी के सवाल को लेकर जितनी भी लेटेस्ट टेक्नालाजी हैं, उनका हर मिनिस्ट्री में उपयोग किया जा रहा है इसलिए उसमें रेलवे भी पीछे नहीं है और उसका हमको रिजल्ट भी मिल रहा है। मुझको कहना नहीं चाहिए लेकिन हमको पिछले तीन महीने के रेलवे के कार्य से संतोष है। सभी माननीय सदस्य जानते हैं कि यह रेलवे के लिए सबसे खराब मौसम जा रहा है और यह रेनी सीजन होता है, बरसात का समय होता है इसलिए यह रेलवे के लिए सबसे खराब पीरियड होता है। इस समय में अगर एक्सीडेंट हो जाये तो रेलवे मिनिस्टर की आधी जान तो निकल ही जाती है। अभी आठ दिन पहले जब पटना की बगल में एक घटना घटी तो सुबह चार बजे तक तो मैं सो नहीं पाया जब तक कि यह मालूम नहीं हो गया कि वहां किसी आदमी की जान को क्षति नहीं हुई है, कोई केजुअलिटी नहीं हुई है। सम्पत्ति की क्षति हो जाये तो वह बर्दाश्त हो जाती है लेकिन किसी की जान की क्षति हो जाये तो किसी भी सेंसेटिव रेलवे मंत्री को बर्दाश्त नहीं हो पाती है। मुझे इस बात की खुशी है कि पिछले तीन महीने के अन्दर एक भी केजुअलिटी की घटना नहीं हुई है जबकि मार्च और अप्रैल के महीने में दर्जनों जगह पर घटनाएं हुई थीं। उसी तरीके से पंक्चुअलिटी का सवाल है, हम उसमें बहुत कड़ाई कर रहे है। बरसात के महीने में भी हम पंक्चुअलिटी का ध्यान रखना चाहते हैं और हम ट्रेनों के एक्सीडेंट को भी अवाइड करना चाहते हैं। यदि आप इन सारी चीजों को देखेंगे तो स्वाभाविक है कि जो नई-नई टेक्नालाजी आई है उससे हमारी स्ट्रैथ प्रति वर्ष जितनी बढ़नी चाहिए थी, वह स्ट्रैथ रेलवे की बढ़ी नहीं है। रेलवे में कर्मचारियों की जितनी पहले संख्या थी, उतनी ही अब है। लेकिन जिस तरीके से दूसरे पब्लिक सेक्टर घाटे में चल रहे हैं, मैं माननीय सदस्यों को विश्वास दिलाना चाहता हूं कि रेलवे उस तरह से घाटे में नहीं चल रहा है।

यदि हमारे सामने पब्लिक वैलफेयर का सवाल न हो, बैकवर्ड एरिया में रेलवे लाइन लगाने का मामला नहीं आता हो और सिर्फ मुनाफा कमाने का सवाल हो तो हम रेलवे को वहीं पर ले जायें जहां पर माल उपलब्ध हो और वहीं पर वैगन्स को भी ले जाने का काम करे तो रेलवे तो दो सौ परसेंट मुनाफे में काम करेगा। चूंकि हम काफी मुनाफा कमाते हैं और दूसरी तरफ नई रेलवे लाइनों के विकास के ऊपर और पैसेन्जर के ऊपर हम खर्चा भी करते हैं और जितनी भी रेल गाड़ियां पैसेन्जर के लिए चलती हैं वे सब घाटे में चलती हैं। इसको आप हिन्दुस्तान में ही नहीं, वर्ल्ड के किसी भी कोने में देख लीजिए। रेलवे के घाटे की पूर्ति हम माल ढोकर करते हैं। इसलिए रेलवे की दयनीय स्थिति का जो आपने चित्रण किया है, वैसी दयनीय स्थिति रेलवे की नहीं है। यदि रेलवे के पास अधिक से अधिक फंड हो तो हम चाहते हैं कि जो अधिक से अधिक रूरल एरियाज हैं, अविकसित एरियाज है, हम उनके विकास का काम कर सकें। लेकिन यदि हम अविकसित एरियाज को छोड़ दें, सिर्फ अपने रिसोर्सेज के ऊपर हम निर्भर रहे तो रेलवे को आज जितना मुनाफा हो रहा है उससे चार गुना मुनाफा होगा।

***483[The Questioner (Shri Aantray Devshankar dave) was absent. For answer vide Col...infra]**

Procedure for Tender in Railways

*484. SHRI MD. SALIM:
SHRI NILOTPAL BASU:

Will the Minister of RAILWAYS be pleased to state:

(a) whether there are any procedures for inviting tenders in the Railways;

(b) if so, when such procedures were laid down;

(c) whether there are cases of violation of these procedures; and

(d) if so, the details thereof?

रेल मंत्री (श्री राम विलास पासवान): (क) जी हां।

(ख) ये प्रक्रियाएं बुहत पहले से प्रचलित हैं। ये नियमों और प्रक्रियाओं के सारसंग्रह में मौजूद हैं। नवीनतम संस्करण 1990 में प्रकाशित हुआ था।

(ग) जी नहीं।

(घ) प्रश्न नहीं उठता।

*The Queston was actually asked in the floor of the House by Shri. Md. Salim.

SHRI MD. SALIM: Sir, Part (b) of my question was, when such procedures were laid down मंत्री महोदय का जवाब है कि बहुत पहले से चल रहा है। लेकिन यह प्राचीन काल से भी चल रहा है वह और कह वह रहे हैं कि 1990 में छापा गया है। मैं पब्लिकेशन की बात नहीं पूछ रहा हूं। मेरा सवाल था कि व्हैन सच प्रोसीजर वाज लेड डाउन, ब्रिटिश जमाने से चल रहा है, आजादी के बाद से चल रहा है। तो आपको जरा देखना चाहिए था और मैं आपकी सहायता के लिए ही पूछ रहा हूं क्योंकि यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट ट्रांसपरेंसी की बात कर रही है और रेलवे का जो प्रोसीजर है उसके बार में डे-नोवो, वह हमारी बात नहीं है, रेलवे कन्वेशन कमेटी की 1993 की रिपोर्ट में यह कहा गया है कि जो रुल्स और प्रोसीजर चल रहा है, टेंडरिंग के बारे में यह राज्यसभा में 26.8.93 को रखा गया है। जो रेवले कन्वेंशन कमेटी की चौथी रिपोर्ट है वह कह रही है कि टेंडरिंग प्रोसीजर को नये सिरे से देखना पड़ेगा। लेकिन आप कह रहे हैं कि 1990 में हमने छाप दी। पिछले पांच सालों में और खासकर के 1990 के बाद से क्या टेंडरिंग के प्रोसजिर में आपको कोई शिकायत मालूम नहीं हुई? हमारा सवाल पार्ट "सी" में था कि वेदर देयर आर केसेज आफ वाइलेशन आफ दीज प्रोसीजर्स तो आंसर इज, नो। मंत्री महोदय सदन में फिर दुबारा रिपीट करें कि पिछले पांच सालों में रेवले के टेंडर प्रोसीजर में कोई शिकायत या कोई वाइलेशन नहीं हुआ? अब मैं अपना सप्लीमेंटरी सवाल पूछूंगा।

मेरा सप्लीमेंटरी है कि रेवले में सप्लाई के बारे में या कन्स्ट्रक्शन के बारे में जो टेंडरिंग होते हैं वे तरह तरह के होते हैं। वहां पर ओपन टेंडर, लिमिटेड टेंडर, सिंगल टेंडर और नेगोसियेशन टेंडरिंग है। मेरा पहला सवाल है कि आप पिछले पांच साल, तीन साल, पिछले साल, जो आंकड़े आपके पास मौजूद हैं, आप यह बतलाइए कि जो रेलवे के टेंडर हुए हैं, उनमें से कितने थ्रू ओपन टेंडर, कितने थ्रू लिमिटेड टेंडर, कितने थ्रू सिंगल टेंडर और कितने थ्रू नेगोसियेशन टेंडर हुए हैं?

Sir. part (b) of my question was– when such procedure were laid down.

†श्री मो. सलीम : मंत्री महोदय का जवाब है कि बहुत पहले से चल रहा है लेकिन यह प्राचीन काल से भी चल रहा है और वह कह रहे हैं कि 1990 में छापा गया है। पब्लिकेशन की बात नहीं पूछ रहा हूं। मेरा सवाल था कि "व्हैन सच प्रोसीजर वाज लेड डाउन" ब्रिटिश जमाने से चल रहा है, आजादी के बाद से चल रहा है। तो जरा आपको देखना चाहिए था और मैं आपकी सहायता के लिए ही पूछ रहा हूं क्योंकि यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट ट्रांसपरेंसी की बात कर रही है और रेलवे का जो प्रोसीजर है उसके बार में डे-नोवो, वह हमारी बात नहीं है, रेलवे कन्वेशन कमेटी की 1993 की रिपोर्ट में यह कहा गया है कि जो रुल्स और प्रोसीजर चल रहा है, टेंडरिंग के बारे में यह राज्यसभा में 26.8.93 को रखा गया है। जो रेवले कन्वेंशन कमेटी की चौथी रिपोर्ट है वह कह रही है कि टेंडरिंग प्रोसीजर को नये सिरे से देखना पड़ेगा। लेकिन आप कह रहे हैं कि 1990 में हमने छाप दी। पिछले पांच सालों में और खासकर के 1990 के बाद से क्या टेंडरिंग के प्रोसजिर में आपको कोई शिकायत मालूम नहीं हुई? हमारा सवाल पार्ट "सी" में था कि वेदर देयर आर केसेज आफ वाइलेशन आफ दीज प्रोसीजर्स तो आंसर इज, नो। मंत्री महोदय सदन में फिर दुबारा रिपीट करें कि पिछले पांच सालों में रेवले के टेंडर प्रोसीजर में कोई शिकायत या कोई वाइलेशन नहीं हुआ? अब मैं अपना सप्लीमेंटरी सवाल पूछूंगा।

मेरा सप्लीमेंटरी है कि रेवले में सप्लाई के बारे में या कन्स्ट्रक्शन के बारे में जो टेंडरिंग होते हैं वे तरह तरह के होते हैं। वहां पर ओपन टेंडर, लिमिटेड टेंडर, सिंगल टेंडर और नेगोसियेशन टेंडरिंग है। मेरा पहला सवाल है कि आप पिछले पांच साल, तीन साल, पिछले साल, जो आंकड़े आपके पास मौजूद हैं, आप यह बतलाइए कि जो रेलवे के टेंडर हुए हैं, उनमें से कितने थ्रू ओपन टेंडर, कितने थ्रू लिमिटेड टेंडर, कितने थ्रू सिंगल टेंडर और कितने थ्रू नेगोसियेशन टेंडर हुए हैं?

†श्री मो. सलीम : मंत्री महोदय का जवाब है कि बहुत पहले से चल रहा है लेकिन यह प्राचीन काल से भी चल रहा है और वह कह रहे हैं कि 1990 में छापा गया है। पब्लिकेशन की बात नहीं पूछ रहा हूं। मेरा सवाल था कि "व्हैन सच प्रोसीजर वाज लेड डाउन" ब्रिटिश जमाने से चल रहा है, आजादी के बाद से चल रहा है। तो जरा आपको देखना चाहिए था और मैं आपकी सहायता के लिए ही पूछ रहा हूं क्योंकि यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट ट्रांसपरेंसी की बात कर रही है और रेलवे का जो प्रोसीजर है उसके बार में डे-नोवो, वह हमारी बात नहीं है, रेलवे कन्वेशन कमेटी की 1993 की रिपोर्ट में यह कहा गया है कि जो रुल्स और प्रोसीजर चल रहा है, टेंडरिंग के बारे में यह राज्यसभा में 26.8.93 को रखा गया है। जो रेवले कन्वेंशन कमेटी की चौथी रिपोर्ट है वह कह रही है कि टेंडरिंग प्रोसीजर को नये सिरे से देखना पड़ेगा। लेकिन आप कह रहे हैं कि 1990 में हमने छाप दी। पिछले पांच सालों में और खासकर के 1990 के बाद से क्या टेंडरिंग के प्रोसजिर में आपको कोई शिकायत मालूम नहीं हुई? हमारा सवाल पार्ट "सी" में था कि वेदर देयर आर केसेज आफ वाइलेशन आफ दीज प्रोसीजर्स तो आंसर इज, नो। मंत्री महोदय सदन में फिर दुबारा रिपीट करें कि पिछले पांच सालों में रेवले के टेंडर प्रोसीजर में कोई शिकायत या कोई वाइलेशन नहीं हुआ? अब मैं अपना सप्लीमेंटरी सवाल पूछूंगा।

मेरा सप्लीमेंटरी है कि रेवले में सप्लाई के बारे में या कन्स्ट्रक्शन के बारे में जो टेंडरिंग होते हैं वे तरह तरह के होते हैं। वहां पर ओपन टेंडर, लिमिटेड टेंडर, सिंगल टेंडर और नेगोसियेशन टेंडरिंग है। मेरा पहला सवाल है कि आप पिछले पांच साल, तीन साल, पिछले साल, जो आंकड़े आपके पास मौजूद हैं, आप यह बतलाइए कि जो रेलवे के टेंडर हुए हैं, उनमें से कितने थ्रू ओपन टेंडर, कितने थ्रू लिमिटेड टेंडर, कितने थ्रू सिंगल टेंडर और कितने थ्रू नेगोसियेशन टेंडर हुए हैं?

Sir. part (b) of my question was– when such procedure were laid down.

†श्री मो. सलीम : मंत्री महोदय का जवाब है कि बहुत पहले से चल रहा है लेकिन यह प्राचीन काल से भी चल रहा है और वह कह रहे हैं कि 1990 में छापा गया है। पब्लिकेशन की बात नहीं पूछ रहा हूं। मेरा सवाल था कि "व्हैन सच प्रोसीजर वाज लेड डाउन" ब्रिटिश जमाने से चल रहा है, आजादी के बाद से चल रहा है। तो जरा आपको देखना चाहिए था और मैं आपकी सहायता के लिए ही पूछ रहा हूं क्योंकि यूनाइटेड फ्रंट गवर्नमेंट ट्रांसपरेंसी की बात कर रही है और रेलवे का जो प्रोसीजर है उसके बार में डे-नोवो, वह हमारी बात नहीं है, रेलवे कन्वेशन कमेटी की 1993 की रिपोर्ट में यह कहा गया है कि जो रुल्स और प्रोसीजर चल रहा है, टेंडरिंग के बारे में यह राज्यसभा में 26.8.93 को रखा गया है। जो रेवले कन्वेंशन कमेटी की चौथी रिपोर्ट है वह कह रही है कि टेंडरिंग प्रोसीजर को नये सिरे से देखना पड़ेगा। लेकिन आप कह रहे हैं कि 1990 में हमने छाप दी। पिछले पांच सालों में और खासकर के 1990 के बाद से क्या टेंडरिंग के प्रोसजिर में आपको कोई शिकायत मालूम नहीं हुई? हमारा सवाल पार्ट "सी" में था कि वेदर देयर आर केसेज आफ वाइलेशन आफ दीज प्रोसीजर्स तो आंसर इज, नो। मंत्री महोदय सदन में फिर दुबारा रिपीट करें कि पिछले पांच सालों में रेवले के टेंडर प्रोसीजर में कोई शिकायत या कोई वाइलेशन नहीं हुआ? अब मैं अपना सप्लीमेंटरी सवाल पूछूंगा।

मेरा सप्लीमेंटरी है कि रेवले में सप्लाई के बारे में या कन्स्ट्रक्शन के बारे में जो टेंडरिंग होते हैं वे तरह तरह के होते हैं। वहां पर ओपन टेंडर, लिमिटेड टेंडर, सिंगल टेंडर और नेगोसियेशन टेंडरिंग है। मेरा पहला सवाल है कि आप पिछले पांच साल, तीन साल, पिछले साल, जो आंकड़े आपके पास मौजूद हैं, आप यह बतलाइए कि जो रेलवे के टेंडर हुए हैं, उनमें से कितने थ्रू ओपन टेंडर, कितने थ्रू लिमिटेड टेंडर, कितने थ्रू सिंगल टेंडर और कितने थ्रू नेगोसियेशन टेंडर हुए हैं?

نہیں ہوا - اب میں اپنا سپلیمنٹری سوال پوچھوں گا
میرا سپلیمنٹری ہے کہ ریلوے میں سپلائی
کے بارے میں یا کنسٹرکشن کے بارے میں جو
ٹینڈرنگ ہوتے ہیں وہ مرحلہ وار کے ہوتے
ہیں - وہاں پر اوپن ٹینڈر - کمپیٹ ٹینڈر
سنگل ٹینڈر اور نگوسیشن ٹینڈرنگ ہے -
میرا پہلا سوال ہے آپ پچھلے پانچ سال - تین
سال - پچھلے سال جو آنکڑے آپکے پاس موجود
ہیں آپ یہ بتائیے کہ جو ریلوے کے ٹینڈر ہوئے
ہیں کتنے فیصد اوپن ہے -

श्री राम विलास पासवान: सभापति जी, माननीय सदस्य ने जो प्रश्न किया है वह किया है प्रक्रिया के संबंध में प्रोसीजर के संबंध में। आप जानते हैं कि जहां तक प्रोसीजर का सवाल है हम लोगों ने प्रोसीजर का कोई वाइलेशन नहीं किया है। दूसरी बात जो माननीय सदस्य ने कही है, आप जानते हैं कि जो प्रोसीजर तय किया गया था वह पहली बार 1938 में तय किया गया था और उसके बाद उसे 1990 में रिवाइव किया गया। टेंडर के मामले में क्योंकि हम बहुत कमजोर हैं लेकिन एज ए ले मैन के हिसाब से जो मैं समझ पाया वह यह है कि जो टेंडर प्रोसीजर है वह अभी चार तरीकों से किया जाता है। एक तो ओपन टेंडर होता है, दूसरा लिमिटेड होता है, तीसरा सिंगल होता है और चौथा बुलेटिन के माध्यम से होता है। हमारे दिमाग में भी यह बात नहीं आती थी कि यह चार तरह से क्यों किया जाता है। जब करना है तो एक ही तरह से करो, ओपन टेंडर करो और सब को आने का मौका दो। सब अपने अपने टेंडर दें। लेकिन हमको बतलाया गया कि नहीं साहब इसमें लिमिटेड इसलिए किया जाता है कि बहुत सी चीजें स्पेसिफाइट होती हैं। स्पेशल कोई काम है, रेलवे के कई काम ऐसे होते हैं जो स्पेशल नेचर के होते हैं। उस स्पेशल नेचर काम को एक ही कंपनी है जो कर सकती है और उस पर हम विश्वास करते हैं तो उसमें सिंगल टेंडर फ्लोट करते हैं। दूसरा लिमिटेड है। बहुत सारी चीजों को देखकर रेलवे विभाग यह तय करता है कि इस दायरे के अंदर इतने ही लोग आते हैं। इसलिए समय को बचाने के लिए और इनर्जी को कम खर्च करने के लिए उस टेंडर को कुछ लोगों के बीच में ही लिमिटेड किया जाता है। जहां काम तीन लाख से कम होता है तो पैसा कुछ कम करने के लिए, पैसा बचाने के लिए उसको बुलेटिन में निकाला जाता है। इसे बुलेटिन के माध्यम से इसलिए निकाला जाता है क्योंकि अगर एडवर्टाइजमेंट निकालेंगे तो तीन लाख रुपया इसी में लग जाएगा, जितने की मुर्गी उतने का मसाला। उसके बाद जो 3 लाख से ज्यादा के होते हैं उनको ओपन टेंडर के रूप में किया जाता है। इसमें हमें भी पहले डाउट होता था कि सारे ओपन टेंडर क्यों नहीं होते हैं। लेकिन जहां तक ट्रांसपेरेंसी का सवाल है, मैं इस बात की जरुर कोशिश करुंगा कि इसमें ट्रांसपेरेंसी लायी जाए। इसमें बंगलिंग की शिकायत आती रही है। इसमें कोई दो मत नहीं है कि शिकायतें आती है। शिकायतें पार्लियामेंट में, लोक सभा में और राज्यसभा में आती हैं चाहे हम अपोजीशन में रहें और चाहे ट्रजरी बेचेंज में रहे, हम ऐसा नहीं कहते कि शिकायत नहीं आती हैं और उनमें कइयों में तथ्य भी हो सकते हैं। लेकिन जहां तक ट्रांसपेरेंसी का सवाल है, मैं माननीय सदस्य से पूरी तरह से सहमत हूं कि ट्रांसपेरेंसी जहां रहती है, जहां शीशे का घर होता है वहां कोई गड़बड़ी नहीं होती है। लेकिन अगर वहां पर्दा लगा दें तो हजारों तरह की गड़बड़ियां होती हैं। इसलिए हम रेल मंत्रालय में यह कोशिश कर रहे हैं क्योंकि रेलवे बिगेस्ट इम्पलायर भी है और उसमें सबसे ज्यादा राशि भी लगती है।

तो इसमें चाहे टेंडर का मामला हो, चाहे खरीद-बिक्री का मामला हो, इन सारे मामलों में जितने ज्यादा से ज्यादा ट्रांस्पेरेंसी रखी जाए, इस पर हम स्वयं चिन्तित है और कार्यवाही भी कर रहे हैं। लेकिन बहुत सी चीज़ें जो हम करते हैं हम पब्लिकली बोल नहीं सकते हैं।

श्री मोहम्मद सलीम: धन्यवाद, मंत्री जी। अपने ट्रांस्पेरेंसी की बात की।

Just we have concluded yesterday the World Poultry Congress in Delhi.

[شری محمد سلیم : شکریہ منتری جی - آپنے ٹرانسپیرنسی
کی بات کی -]

मुर्गी और मस्सलम की बात दिल्ली में काफी हुई।

†مرغ اور مسلم کی بات دھلی میں کافی ہوئی ہے۔

मौलाना औबेदुल्ला खान आज़मी: मस्सलम नहीं मसाला बोला था (व्यवधान)

†مولانا عبید اللہ خاں اعظمی: مسلم نہیں مسالہ بولا تھا۔۔۔۔"مداخلت"۔۔۔]

श्री मोहम्मद सलीम: मंत्री महोदय ने इस बात को एडमिट किया है कि ट्रांस्पेरेंसी का जहां तक सवाल है, 1938 में यह प्रोसीजर लेड डाउन हुआ, वह अभी भी चल रहा है और 1990 में भी कोई नया प्रोसीजर नये सिरे से ले-डाउन नहीं किया गया है। आपने अमेंडमेंट वगैरह कर के उसके बाद छापा है। अब मैं यह जानना चाहूंगा, हमारे पिछले सवाल का जवाब आना चाहिये कि क्या आप नये सिरे से मोर ओपन, मोर ट्रांसपेरेंट प्रोसीजर बनायेंगे? दूसरा सवाल हमारा है, मंत्री महोदय ने पहले सवाल का जवाब नहीं दिया कि इसमें कितना परसेंटेज ओपन टेंडरिंग है, कितना बुलेटिन है, कितना लिमिटेड है और कितना सिंगल टेंडरिंग है?

The term single tender itself means: No tendering, no bidding, no competition, just you ask the company that you supply this सिंगल टेंडर बोलना ही नहीं चाहिये, इसको फेवरटिज्म बोलना चाहिये। इसको हम नॉमीनेशन कह सकते है। यह टेंडर नहीं होगा। देश के किसी भी दूसरे भाग में सिंगल टेंडर का तरीका नहीं है तो रेवले में सिंगल टेंडर सिस्टम क्यों है? मंत्री महोदय आज़ादी के 50 साल बाद कह रहे हैं कि कोई एक ही सप्लायर है, कोई एक ही कंपनी है, उन्हीं को बुला कर दिया जाता है। कोई कंपीटीशन नहीं है जबकि हम आज कंपीटीशन की इतनी बात करते हैं। आपको जान कर आश्चर्य होगा कि डीज़ल जो खरीदतें हैं, यह कमेटी की रिपोर्ट में भी है,

Sir, Railways procure high speed diesel not from Indian Oil, but they procure from the Director General of Supplies and Disposals.

कोल इण्डिया से कोयला खरीदते हैं लेकिन डीज़ल इण्डियन आयल से नहीं खरीदते हैं। मैं यह जानना चाहता हूं कि जो पब्लिक सेक्टर और स्माल स्केल सेस्टर की प्रोडक्शन है कम से कम उसके लिए यह बंदोबस्त करेंगे कि कोई कार्टलाइजेंशन नहीं हो, लिमिटेड टेंडर का मतलब है प्राइस के बारे में कार्टलाइजेंशन, सप्लाई के बारे में कार्टलाज़ेशन। क्या आप इस कार्टलाइज़ेशन को खत्म करने के लिए पब्लिक सेक्टर के लिए स्पेशल तवज्जों देंगे ताकि कार्टलाइज़े न हो जाने के कारण नये सप्लायर्ज़ को, नये कंट्रेक्टर्ज़ को कोई दिक्कत न हो दूसरी बात प्राइस पैरिटी की है। आपने रिज़र्वेशन के लिए कम्प्यूटराइज़ेशन किया है। इसमें आपके पास अडीशनल केपेसिटी है। जब कोई माल की सप्लाई होती है तो उसमें एक ज़ोन में एक कीमत होती है और दूसरे ज़ोन में दूसरी कीमत होती है। उसमें भी आप कम्प्यूटराइज़ेशन कर के यह मालूम कर लेंगे कि जो सप्लाई होगा वह कम्प्यूटर के स्क्रीन पर आ जाएगा और आप यह देख लेंगे कि इसका प्राइस कंपीटिटिव है, प्राइस क्या है, कौन सप्लायर है।

Whether you will lead to computerization in this tendering process?

†مشتری محمد سلیم: منتری مہودے نے اس بات کو ایڈمٹ کیا ہے کہ ٹرانسپیرینسی کا جہاں تک سوال ہے۔ 1938 میں یہ پروسیجر لیڈ ڈاون ہوا۔ وہ ابھی بھی چل رہا ہے۔ 1990 میں بھی کوئی نیا پروسیجر نئے سرے سے لیڈ ڈاون نہیں کیا گیا ہے۔ آپنے اپائنٹمینٹ وغیرہ کرکے اسکے بعد چھاپا ہے اب میں یہ جاننا چاہونگا کہ ہمارے پچھلے سوال کا جواب آنا چاہیئے۔ کہ کیا آپ نئے سرے سے مور اوپن۔ مور ٹرانسپیرینٹ۔ پروسیجر بنائیں گے۔ دوسرا سوال ہمارا ہے۔ منتری مہودے نے پہلے سوال کا جواب نہیں دیا۔ کہ اس میں کتنا فیصد اوپن

†سنگل ٹینڈر رنگ ہے۔ کتنا بلیٹن ہے کتنا کمیٹڈ ہے اور کتنا سنگل ٹینڈرنگ ہے۔]

The term single tender itself means; No tendering, no bidding, no competition, just you ask the company that you supply this.

†[سنگل ٹینڈر بولنا ہی نہیں چاہئے اسکو فیوچرسٹم بولنا چاہیئے۔ اسکو ہم نامی نیشن کہہ سکتے ہیں یا ٹینڈر نہیں ہوگا۔ دیش کے کسی بھی دوسرے بھاگ میں سنگل ٹینڈر کا طریقہ نہیں ہے تو ریل میں سنگل ٹینڈر سسٹم کیوں ہے۔ منتری مہودے آزادی کے پچاس سال بعد کہہ رہے ہیں کہ کوئی ایک ہی سپلائر ہے کوئی ایک ہی کمپنی ہے۔ انھیں تو بلا کر دیا جاتا ہے۔ کوئی کمپٹی نہیں ہے۔ جبکہ ہم آج کمپٹی نیشن کی اتنی بات کرتے ہیں آپ کو جان کر حیرت ہوگی کہ ڈیزل جو خریدتے ہیں یا یہ کمیٹی کی رپورٹ میں بھی ہے۔]

Sir, Railways procure high speed diesel not from Indian Oil, but they procure from the Director General of Supplies and Disposals.

श्री राम विलास पासवान: सभापति महोदय, विभिन्न वर्षों में या पिछले तीन सालों में माननीय सदस्य आंकड़ा मांग रहे हैं, वह हम उनको भेज देंगे कि कितना परसेंटेज ओपन टेंडर, कितना परसेंटेज सिंगल टेंडर किया गया। जहां तक इन्होंने कहा कि हम नये सिरे से प्रोसीजर बनाने पर विचार करेंगे, मैंने पहले ही कहा है कि विचार करेंगे नहीं, जहां औचित्य होगा हम विचार कर रहे हैं। बहुत सी चीज़ें ऐसी है जो हमें स्वयं ही पता नहीं चलती है। हम लोग कार में बैठते हैं, वह कार मारुति कंपनी की है। मारुति में सरकार का कुछ परसेंट पैसा लगा हुआ है लेकिन आज तक हम को पता नहीं लगा कि हम एम्बेजऐडर में क्योंकि बैठते हैं? इसलिए बहुत सी ऐसी चीज़ें हैं जिसमें हम स्वयं डीप में जा रहे हैं। कहां सिंगल होगा? जैसे बहुत सी चीज़ें हैं, जहां हमें लेटेस्ट टेक्नोलोजी लेनी है। लेटेस्ट टेक्नोलोजी में कोई खास एक कम्पनी है, कोई एक ही कंट्री है, जहां उसका इन्नोवेशन हुआ है। तो स्वाभाविक है कि हम सिंगल में जाएंगे। माननीय सदस्य की जो भावना है, मैं उससे सहमत हूं चाहे लिमिटेड हो, चाहे सिंगल हो, चाहे ओपन हो, हमारी यह कोशिश होनी चाहिये कि जितने भी उस क्षेत्र में लगे हुए लोग हैं, जितने भी रिप्यूटेड लोग हैं, उस क्षेत्र में प्रतिष्ठित लोग हैं, उन सब लोगो को इनवाइट किया जाना चाहिये। जो आपने कहा कि इसको रिव्यु करेंगे, उसको हम दोबारा देखेंगे।

SHRI NILOTPAL BASU: Mr. Chairman, Sir, through you, I would like to draw the attention of the hon. Minister to part (c) of the question. In this connection, I would like to know whether any matter has been referred to the CBI. I would also like to know whether any adverse comments have been made by the CAG, I am asking this because a Report was placed in this House by the Railway Wagons Committee. Certain adverse comments have been made therein about the procurment of wagons. Therefore, in regard to part (c).....

MR. CHAIRMAN: Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTION

उर्वरक उत्पादन

*483. **श्री अनन्तराय देवशंकर दवे:** क्या रसायन और उर्वरक मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) वर्ष 1994-95 और 1995-96 के दौरान देश में गुजरात सहित राज्यवार उर्वरकों का कितना उत्पादन हुआ;

(ख) उक्त अवधि के दौरान वर्षवार घरेलू खपत के लिए उर्वरकों का कुल कितना भंडार रखा गया;

(ग) उक्त अवधि के दौरान वर्षवार उर्वरकों के सुरक्षित भंडार में से कितने मात्रा का निर्यात किया गया;

(घ) उर्वरक संयंत्रों के पास जुलाई, 1996 के अंत में उर्वरकों का कुल कितना भंडार था; और

†[] Transliteration in Arabic Script.